शिक्षण विधि

जिस ढंग से शिक्षक शिक्षार्थी को ज्ञान प्रदान करता है उसे शिक्षण विधि कहते हैं। " शिक्षण विधि" पद का प्रयोग बड़े व्यापक अर्थ में होता है। एक ओर तो इसके अंतर्गत अनेक प्रणालियों एवं योजनाएं सम्मिलित की जाती हैं दूसरी ओर शिक्षण की बहुत सीप्रक्रियाएं भी सम्मिलित कर ली जाती हैं।

शिक्षण विधि के प्रकार

1. आगमन विधि (Inductive Method)
2. निगमन विधि (Deductive Method)
3. विश्लेषण विधि (Analytical Method)
4. संस्लेशण विधि (Synthesis Method)
5. प्रयोगशाला विधि (Lab/Laboratroy Method)
6. अनुसंधान विधि (Heuristic Method)
7. समस्या समाधान विधि (Problem Solving Method)
8. प्रयोजन विधि (Project Method)
9. व्याख्यान विधि (Lecture Method)
10. विचार-विमर्श विधि (Discussion Method)

आगमन विधि (Inductive Method) - इस विधि में प्रत्यक्ष अनुभवों, उदाहरणों तथा प्रयोगों का अध्ययन कर नियम निकाले जाते है तथा ज्ञात तथ्यों के आधार पर उचित सूझ-बूझ से निर्णय लियाजाता है। इसमें शिक्षक छात्रों को अध्ययन

(क) प्रत्यक्ष से प्रमाण की ओर
(ख) स्थूल से सूक्ष्म की ओर, एवं
(ग) विशिष्ट से सामान्य की ओर

करवाते हैं।

आगमन विधि में प्रयुक्त चरण (Steps of Inductive Method)

सर्वप्रथम हम एक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। (Example)

इस उदाहरण के आधार पर एक नियम बनाया जाता है, जिसे सामान्यीकरण कहा जाता है। (Generalization)

उस सामान्य नियम का परीक्षण करके उसका सत्यापन किया जाता है। (Testing and verification)

आगमन विधि के गुण एवं दोष

गुण

- एक वैज्ञानिक विधि है, जिससे बालकों में नवीन ज्ञान को खोजने का मौका उपलब्ध कराता है।
- ज्ञात से अज्ञात की ओर, सरल से जटिल की ओर चलकर बालकों से मूर्त उदाहरणों से सामान्य नियम निकलवाये जाते हैं, जिससे बालकों में जिज्ञासा बनी रही रहती हैं।
- स्वयं से अधिगम करने के कारण अधिगम अधिक स्थाई रहता है। बालक स्वयं ही समस्या का निकारण अपने विश्लेषण से प्राप्त करते हैं जिससे उनका अधिगम स्थाई रहता है।
- व्यवहारिक और जीवन में लाभप्रद विधि है।

दोष

- समय अधिक लगता है।
- अधिक परिश्रम और सूझ की आवश्यकता रहती है।
- एक तरह से अपूर्ण विधि है, क्योंकि खोजे गये नियों में तथ्यों की जांच के लिए निगमन विधि की जरूरत होती है।
- बालक यदि किसी अशुद्ध नियम की प्राप्ति कर ले तो उसे सत्यको प्राप्त करने में अधिक श्रम व समय की जरूरत होती है।

बालक यदि किसी अशुद्ध नियम की प्राप्ति कर ले तो उसे सत्यको प्राप्त करने में अधिक श्रम व समय की जरूरत होती है।

2. **निगमन विधि (Deductive Method)** - इस विधि मे पहले से स्थापित नियमों व सूत्रों का प्रयोग करके अध्यापक छात्रों को समस्या का समाधान करना सीखाते हैं।

- नियम से उदाहरण की ओर
- सामान्य से विशिष्ट की ओर
- सूक्ष्म से स्थूल की ओर एवं
- प्रमाण से प्रत्यक्ष की ओर चलती है।

निगमन विधि के गुण एवं दोष

गुण

- यह एक सरल और सुविधाजनक विधि है,
- स्मरणशक्ति के विकास में सहायक है।
- संक्षिप्त और व्यवहारिक विधि है।
- बालक तेजी से सीखता है।

दोष

- रटने की शक्ति पर बल देती है।
- निजी विश्लेषण क्षमता का प्रयोग न करने के कारण मानसिक विकास और कल्पना शक्ति का विकास बाधित होता है।
- रटा हुआ ज्ञान स्थाई नहीं रह पाता है।

छोटी कक्षाओं के लिए सर्वथा अनुपयुक्त विधि

3. **विश्लेषण विधि (Analytical Method)**

किसी विधान या व्यवस्थाक्रम की सूक्ष्मता से परीक्षण करने की तथा उसके मूल तत्वों को खोजने की क्रिया को 'विश्लेषण' नाम दिया जाता है।

यह विधि अज्ञात से ज्ञात की ओर चलती है।

इसका प्रयोग रेखागणित में प्रमेय, निर्मेय आदि को सिद्ध करने में प्रयुक्त होता है।

जैसे- पाइथागोरस का प्रयोग-

कर्ण का वर्ग = आधार का वर्ग + लम्ब पर बना वर्ग

विश्लेषण विधि

गुण

- यह एक मनोवैज्ञानिक विधि है
- बालकों में जिज्ञासा उत्पन्न कर उनमें अभ्यास के प्रति रुचि उत्पन्न करती है।
- स्वयं समस्या का समाधान करने हल खोजने पर बल देती है।
- अन्वेषण क्षमता अर्थात खोजने करने की क्षमता का विकास होता है।
- स्थाई ज्ञान उत्पन्न होता है।

दोष

- अधिक समय लेने वाली विधि है।
- कुशल अध्यापन की जरूरत होती है।
- अधिक तर्क शक्ति, सूझ शक्ति की जरूरत होती है।
- छोटी कक्षा के बालकों के लिए अनुपयोगी मानी जाती है।

छोटी कक्षा के बालकों के लिए अनुपयोगी मानी जाती है।

4. **संश्लेषण विधि (Synthesis Method)**- संश्लेषण का अर्थ होता है- अनेक को एक करना, अर्थात इस विधि में कई विधियों का उपयोग करके समस्या का समाधान करने पर बल दिया जाता है।

हिन्दी पढ़ाने में पहले वर्णमाला सिखाकर तब शब्दों का ज्ञान कराया जाता है। तत्पश्चात् शब्दों से वाक्य बनवाए जाते हैं।

संश्लेषण विधि

गुण

- ज्ञात से अज्ञात की ओर ले जाती है, अर्थात ज्ञात नियमों का प्रयोग करके अज्ञात परिणाम की प्राप्ति की जाती है।
- सरल और सुविधाजनक विधि से मानी जाती है।
- समस्या का समाधानतीव्रता से संभव है।
- स्मरणशक्ति के विकास में सहयोग करती है।
- गणितीय समस्याओं का समाधान इसी विधि के उपयोग से किया जाता है।

दोष

- रटने की प्रवृत्ति पर जोर देती है, जिससे अन्वेषण क्षमता के विकास का मौका उपलब्ध नहीं होता है।
- नवीन ज्ञान, तार्किक क्षमता और चिन्तन रहित विधि है, अर्थात इनके विकास में सहयोग नहीं करती है।
- अर्जित ज्ञान अस्थाई होता है, अर्थात जब तक सूत्र याद है तभी तक समस्या का हल निकाला जा सकता है।
- छोटे बालकों में चिन्तन शक्ति का ह्रास करती है।